mardi 16 avril 2013

HIN2B09b

(Compréhension de l'écrit)

Cours –11

बस याद में ही न रह जाए बैलगाड़ी

गाँवों में अब बैलगाड़ी की जगह गाड़ियों ने ले ली है, पेश है सौम्या टंडन की विशेष रिपोर्ट

देवरा (बाराबंकी) । शाम के छह बजे सड़क पर करीब पंद्रह बैलगाडियों की रेस चल रही थी। बैलों के गले में बंधे घुंघरुओं की अवाज दूर-दूर तक लोगों का ध्यान खींच रही थी। हर बैलगाड़ी दूसरे को पछाड़ कर आगे निकलने की जद्दोजहद कर रही थी। यह कोई खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि सूरजलाल बाजपेयी (80) यादों के झरोखे से अपनी बारात की तस्वीर खींच रहे थे।

लखनऊ से 30 किमी दक्षिण बाराबंकी जिले के देवरा गांव निवासी सूरजलाल बाजपेयी पुराने समय में शादी-बारात में होने वाली बैलगाडियों की रेस की बात करते नहीं थकते। अपनी बारात की बात करते हुए कहते हैं, 'अब ऐसे नज़ारे नहीं दिखते। आज के समय में बारातों में कार और ट्रैक्टर का काफिला न दिखे तो तौहीन समझी जाती है। बैलगाड़ी बारात से गायब ही नहीं, बल्कि उसका गाँव में दिखना भी कम हो गया है।

बैलगाड़ी पुराने समय में खेतीबाड़ी और कहीं आने-जाने के लिए खूब प्रयोग की जाती थी। लेकिन खेती के काम के लिए ट्रैक्टर का उपयोग होने के बाद से जैसे बैलगाड़ी का पतन ही शुरू हो गया। गाँव में धीरे-धीरे लोगों ने जानवर पालने कम कर दिए, जिसके साथ-साथ बैलगाडियों को खींचने वाले बैल भी कम हो गए। लोगों ने धीरे-धीरे इन्हें बनवाना बंद कर दिया। जो पुरानी उनके पास थीं उन्हीं को ठोक पीट कर काम चलाते रहे।

देवरा गाँव के ही उपकार नारायण पांडेय (62) बैलगाड़ी के खत्म होने की वजह मानते हैं गाँवों में जानवरों का न पाला जाना। वह कहते हैं, "जब गाँवों से बैल ही खत्म हो जाएंगे तो बैलगाडियों को खींचेगा कौन? गाँवों में लोग खेती का सारा काम ट्रैक्टर से कराने लगे हैं।"

लखनऊ से 40 किमी उत्तर कामीपुर गाँव के बसंत लाल(60) ने 20 साल पहले बैलगाड़ी बनाने का काम बंद कर दिया। वह कहते हैं, "पहले बैलगाड़ी बनाने से काफ अच्छी कमाई हो जाती थी, ट्रैक्टर के आने से लोगों ने बैलगाड़ी बनवाना कम कर दिया। इससे काम मिलना बिल्कुल बंद हो गया था। तब मैंने मजदूरी करके और अन्य काम करके अपने घर का खर्चा चलाना शुरू किया। अच्छी कमाई तो नहीं हो पाती पर जीने के लिए कुछ तो करना ही है।"

सामान ढोने के लिए बैलगाडियों का खूब इस्तेमाल होता रहा है। गाँव से बाजारों तक अनाज लाना हो या फिर मंडी तक भूसा, एक गाँव से 10 से 15 बैलगाडियां एक साथ एक कतार में निकलती हैं। यह सफर चार से पांच दिन तक चलता है। रास्ते में रुक कर खाना-पीना खाने के बाद सफर फिर शुरू हो जाता है। लेकिन माल ढोने के लिए छोटे वाहन (पिकप pickup, मेटाडोर matador आदि) आ जाने से भी बैलगाडियों को भी धक्का लगा है।

सिधौली(सीतापुर) से भूसा लेकर मंडी आ रही बैगाडियों की लाइन में बख्सी का तालाब कस्बे के पास अपनी गाड़ी के पास बैठ कर सुस्ता रहे महेश (40) गंभीरता की सांस लेते हुए कहते हैं, "50 किमी का सफर तय करने में दो दिन लगे हैं। इतनी दूर आने में पांच जगह रुके, पर सफर अभी खत्म नहीं हुआ है"।कहते हैं, "पहले और आज में बहुत फ र्क आ गया है। आज के दौर में पिकप और अन्य छोटे माल ढोने वाले वाहनों के ज्यादा चलने से बैलगाडियों का चलना कम हो गया है। जितना दूर हम दो दिन में आए हैं, उतना तो ये फर्राटा भरती गाडियां एक घंटे में पहुंच जाएंगी। जिस वजह से हम लोगों को काम नहीं मिलता। धीरे-धीरे बैलगाडियां खत्म होती जा रही हैं।"

एक सर्वे के अनुसार देशभर में कुल 1 करोड़ चालीस लाख बैलगाडियां हैं। जिनमें से 1 करोड़ 30 लाख पुरानी तरह की हैं, जिनके पहिए आज भी लकड़ी के हैं। मात्र 10 लाख बैलगाडियों को ही थोड़ा आधुनिक बनाते हुए टायर के पहिए और बियरिंग लग पाए हैं।

एक बैलगाड़ी बनाने में एक माह का समय लगता है और 20-25 हजार रुपये खर्च होते हैं। बैलगाड़ी बनाने में सिर्फ शीशम, बबूल, साखू की लकड़ी का ही इस्तेमाल किया जाता है। इसे बनाने में 18 से 20 कुंतल लकड़ी का उपयोग होता है। एक पहिया बनाने में लकड़ी की 6 पुट्टियां बनाई जाती हैं। बैलगाड़ी तीन तरह की होती है सबसे बड़ी गाड़ी 5 फीट की, अध्धा - बैलगाड़ी का लगभग आधा और डनलप जिसकी लंबाई 4 फीट होती है।

करीब दो दशक से बैलगाड़ियाँ बनाते आ रहे देवरा से दो किमी पूरब सुलेमाबाद गाँव निवासी कैलास यादव (55) के पास भी पहले की अपेक्षा कम काम आता है। यादों के पहिए को घुमाकर कैलास बताते हैं, "पहले तो इतना काम होता था कि कभी-कभी बैलगाड़ी बनवाने के लिए लोगों को महीनों इंतजार करना पड़ता था। पर अब वो बात नहीं।"

mardi 16 avril 2013

Vocabulaire et expressions

बैलगाड़ी–f char à boeuf
पेश करना présenter
विशेष spécial
करीब près, approximativement
घुंघरु
पछाड़ना jeter par terre
जद्दोजहद करना lutter pour qqch. effort
प्रतियोगिता–f compétition
झरोखा–m fenêtre
बारात–f procession de mariage
तस्वीर खींचना prendre une photo
निवासी–m habitant
कुछ करते नहीं थकना ne pas tarir à
काफिला–m caravane
तौहीन–f insulte
गायब होना disparaître,
खेतीबाड़ी–f agriculture
पतन–m chute
ठोकना पीटना, donner des coups, façonner
काम चलाना se débrouiller avec
खर्चा–m चलाना gérer les dépenses
सामान–m, माल–m ढोना transporter la charge
अनाज–m céréales,
मंडी–f marché des céréales
भूसा–m paille
कतार–f rangée
सफर–m voyage
छोटा वाहन–m petit véhicule
(पिकप pickup, मेटाडोर matador)
धक्का–m लगना subir un coup
कस्बा–m petite ville
सुस्ताना se reposer
फर्क–m आना, होना, दिखना différence
अन्य autre
फर्राटा भरना accélérer
सर्वे, सर्वेक्षण–m enquête
X के अनुसार selon x
देशभर में dans le pays entier
भरना remplir
कुल en somme, lignée, tribu
आधुनिक moderne
टायर–m pneu
पहिया–m roue
बियरिंग (ang) ball bearing, roulement à billes
शीशम–m palissandre
बबूल–m acacia
साखू–m saule
इस्तेमाल, उपयोग करना utiliser
कुंतल–m quintal
पुट्टियाँ–f les rayons de la roue
आधा moitié
दशक–m décennie
X की अपेक्षा par rapport à x